12

लेखाशास्त्र में नैतिकता
(Ethics in Accountancy)

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप निम्न के बारे में जान सकेंगे –

- नैतिकता की अवधारणा
- नीतिशास्त्र की परिभाषा
- नीतिशास्त्र की प्रकृति
- नैतिकता के स्रोत
- नैतिकता एवं पेशेवर लेखाकार
- लेखा व्यवहारों में नैतिकता
- दिखावटी लेनदेन

परिचय –

नैतिकता कोई आधुनिक खोज नहीं है। शताब्दियों से दर्शनशास्त्री मानव व्यवहार को समझने के क्रम में इसके विभिन्न आयामों की पहचान करते रहे। नैतिकता के लिए अंग्रेजी में प्रयुक्त शब्द एथिक्स (Ethics) ग्रीक शब्द ईथोस (Ethos) से उत्पन्न हुआ माना जाता है, जिसका अर्थ है "जीने का तरीका"। नैतिकता का शास्त्र या नीति शास्त्र दर्शन शास्त्र की एक शाखा है जो व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहार से संबंधित है। यह हमारे आचरण संबंधी निर्णयों के तर्कसंगत औचित्य का परीक्षण करता है। यह बताता है कि नैतिक दृष्टि से क्या सही अथवा गलत है, क्या उचित अथवा अनुचित है, क्या न्याय संगत है या नहीं।

परिभाषा :–

नीति शास्त्र की विभिन्न परिभाषाएँ दी गई हैं, जिनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं :–

आर. वायने. मोंडी के अनुसार – "नीतिशास्त्र एक विषय है जो नैतिक कर्त्तव्य के बारे में अच्छा तथा बुरा अथवा सही तथा गलत से संबंधित है।"

पॉल एवं एल्डर के अनुसार – "नीति शास्त्र अवधारणाओं एवं सिद्धान्तों का एक समूह है जो हमें बताता है कि कौनसा व्यवहार जीवों की सहायता करेगा अथवा उन्हें हानि पहुँचायेगा।"

दर्शन शास्त्र के कैम्ब्रिज शब्दकोष के अनुसार – "नीति शास्त्र का अर्थ प्रायः किसी विशेष परम्परा, समूह अथवा व्यक्ति के नैतिक सिद्धान्तों से लिया जाता है।"

वैबस्टर न्यू वर्ड्स शब्दकोष के अनुसार – "नीतिशास्त्र आचरण के मानकों तथा नैतिक निर्णयों का विषय है। यह एक विशेष उद्देश्य, धर्म, समूह या पेशे के लिए सदाचरण की संहिता या पद्धति है।"

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नीतिशास्त्र ऐसे नियम या सिद्धान्तों का समूह है, जिससे सभी के हितों के लिए सभी व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधों को इस प्रकार शासित किया जाये जिससे सभी की आवश्यकताओं के प्रति परस्पर आदर बना रहे।

प्रकृति –

नीतिशास्त्र की प्रकृति को निम्न प्रकार समझा जा सकता है :–

1. नैतिकता का संबंध केवल मानव से है। इसमें व्यक्ति तथा समाज दोनों सम्मिलित हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि व्यक्ति ही अच्छे एवं बुरे में भेद कर सकता है तथा नैतिक आधार पर बेहतर का चयन कर सकता है।
2. यह व्यवस्थित ज्ञान की एक शाखा है जो सामाजिक विज्ञान से संबंधित हैं। यह मूल्य आधारित निर्णयों तथा व्यक्तिगत व सामाजिक आचरण की एक नियामक पद्धति है।
3. यह मानव के स्वैच्छिक आचरण एवं व्यवहार से संबंधित है। अज्ञानतावश तथा परिस्थितियों के दबाव में किए गये आचरण इसके अपवाद होते हैं। उदाहरणार्थ एक सैनिक द्वारा देश की रक्षा के समय दुश्मनों को मारना अहिंसा की नीति का उल्लंघन नहीं माना जा सकता है।
4. इसमें सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य मानवीय आचरण एक व्यवहार के नियम सम्मिलित होते हैं। जैसे सत्य बोलना, अहिंसा, पवित्रता, नम्रता, सहानुभूति, अपरिग्रह, ईर्ष्यालु न होना आदि।
5. नैतिकता के सिद्धान्त समय एवं स्थान की सीमाओं से बँधे नहीं होते। ये सदैव एवं सभी जगहों पर वैध होते हैं। कोई भी धर्म, देश, समाज ये कभी नहीं कहेगा कि सत्य तथा अहिंसा बुरे तथा अनावश्यक होते हैं। नैतिकता मानव–मूल्यों के आधारभूत तत्त्व हैं। इसीलिए इन्हें सनातन धर्म भी कहा गया है।
6. किसी भी निर्णय के नीतिगत होने के लिए उसमें निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए :–
   (i) सभी संबंधित के लिए सबसे अच्छा
   (ii) ईमानदार
   (iii) उपयुक्त तथा स्वीकार्य
   (iv) न्याय मात्र होना ही नहीं चाहिए अपितु होता हुए प्रतीत भी होना चाहिए।
   (v) नैतिक रूप से सही
   (vi) न्यायसंगत एवं समरूप

नैतिकता के स्रोत :–

अमेरिका के दो नीतिशास्त्र विशेषज्ञों, जॉर्ज एवं जॉन स्टीवर ने नैतिकता के निम्न मूल स्रोत बताए हैं :–

1. **कानून प्रणाली** :– किसी देश में लागू कानून वहां के नैतिक मानकों का मौटे तौर पर प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रकार कानून के द्वारा जीवन के नैतिक पक्षों की शिक्षा भी प्राप्त होती है।
2. **धर्म** :– सभी धर्मों में व्यक्तियों को नैतिक व्यवहार करने की शिक्षाऐं दी गयी है। ये शिक्षाएँ नैतिक व्यवहार का महत्वपूर्ण एवं प्रभावी स्रोत होती है।
3. **आनुवांशिक धरोहर** :– आधुनिक युग में किये गये अनुसंधानों से जीव विज्ञानियों को ऐसे प्रमाण मिले हैं जो बताते हैं कि अच्छाई के गुण, जो किसी व्यक्ति के नैतिक आचरण से संबंधित होते हैं, उसकी आनुवांशिक धरोहर हो सकते हैं।
4. **दार्शनिक प्रणालियाँ** :– प्राचीन काल से ही विद्वानों ने जीवन एवं कर्त्तव्य के प्रति कई दार्शनिक प्रणालियाँ विकसित की है। ये प्रणालियाँ नैतिक व्यवहार के विभिन्न आयामों को बताती हैं।

5. **आचार संहिता** :– ये तीन प्राथमिक वर्गों में बाँटी जा सकती हैं :–

   (i) **कम्पनी की आचार संहिता** :– ये सामान्यतः संक्षिप्त, अधिक सामान्यीकृत तथा उचित व्यवहार के बारे में मोटे तौर पर की गई अपेक्षाएँ दर्शाती है।

   (ii) **कम्पनी की परिचालन नीतियाँ** :– इनमें ग्राहकों की शिकायतों के निवारण, नियुक्तियाँ करने, उपहार देने आदि से संबंधित कम्पनी की नीतियाँ सम्मिलित हैं जो अनैतिक व्यवहारों से सुरक्षा प्रदान करती है।

   (iii) **पेशेवर आचार संहिताएँ** :– पेशेवर संस्थाओं जैसे भारतीय चार्टर्ड अकान्टेन्ट संस्थान ने अपने सदस्यों के लिए आचार संहिताएँ बनाई है जो इनके नैतिक व्यवहार को सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है।

6. **सांस्कृतिक अनुभव** :– कई ऐसे सांस्कृतिक नियम, परम्पराएँ एवं मानक होते हैं जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी आचार–व्यवहार को नियमित करते हैं। व्यक्तिगत मूल्यों को उचित आकार प्रदान करने में समाज के ये नियम बड़ी भूमिका निभाते हैं।

लेखांकन में नैतिकता –

लेखांकन वित्तीय सूचनाओं को प्रदान करने वाला शास्त्र है। इसी के माध्यम से व्यवसाय में हित रखने वाले सभी पक्षकार जैसे अंशधारी, ऋणदाता, ग्राहक, कर्मचारी, सरकार आदि संस्था की वित्तीय स्थिति की सही जानकारी प्राप्त कर पाते हैं। इससे उन्हें सही निर्णय लेने में सहायता प्राप्त होती है। वित्तीय सूचनाएँ प्रदान करने के अतिरिक्त लेखांकन व्यवसाय की सम्पत्तियों की सुरक्षा करने का भी एक महत्वपूर्ण साधन है। लेखों में जब सम्पतियाँ सही मूल्य पर लिखी जाती है तो उनकी चोरी अथवा अन्य प्रकार का दुरुपयोग संभव नहीं होता।

इसी कारण लेखाकार की लेखनी को बहुत शक्तिशाली कहा जाता है। यह आवश्यक है कि लेखाकार अपनी इस क्षमता तथा उत्तरदायित्व को पहचाने तथा लेखांकन करते समय सदैव नैतिक आचरण करे। वास्तव में लेखांकन में सम्पूर्ण नैतिकता अपनाने से ही व्यवसाय में लाभों का विभिन्न पक्षों में न्याससंगत बँटवारा हो पाता है तथा व्यवसाय की आर्थिक सुरक्षा भी सुनिश्चित होती है। ऐसे अनेक उदाहरण भारत में तथा विदेशों में देखने को मिले है जिनमें लेखांकन में नैतिकता नहीं अपनाऐ जाने के कारण बड़े–बड़े व्यवसाय ध्वस्त हो गये तथा उनके कई हितधारियों को आर्थिक अन्याय सहना पड़ा।

नैतिकता तथा पेशेवर लेखाकार –

एक लेखाकार की सबसे मूल्यवान संपत्ति उसकी ईमानदार छवि होती है। पेशेवर लेखाकार की समाज में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विनियोगकर्ता, कर्मचारी, ऋणदाता, सरकार तथा जनसामान्य पेशेवर लेखाकारों पर अनेक प्रकार से निर्भर करते हैं। इनमें अच्छी गुणवत्ता के वित्तीय प्रतिवेदन, प्रभावशाली वित्तीय प्रबंध तथा व्यवसाय व कर से संबंधित मामलों में प्रभावपूर्ण सलाह आदि प्रमुख है। पेशेवर लेखाकारों का ऐसी सेवाओं को प्रदान करने में आचरण एवं व्यवहार देश की आर्थिक खुशहाली पर प्रभाव डालता है। दुनियाभर के पेशेवर लेखाकारों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे समाज को अपनी सर्वश्रेष्ठ सेवाएँ देंगे जो नैतिक आवश्यकताओं के सर्वथा अनुकूल होगी। पेशेवर लेखाकारों के विभिन्न संस्थानों जैसे अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ सर्टिफाइड पब्लिक अकाउन्टेन्ट्स ;।प्ब्।द्ध भारतीय चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट संस्थान ;प्ब्।प्द्ध आदि ने अपने सदस्यों के लिए विस्तृत आचार संहितायें लागू कर रखी है, जिससे पेशेवर लेखाकारों का उच्च नैतिक व्यवहार सुनिश्चित किया जा सके।

लेखा व्यवहारों में नैतिकता –

लेखांकन करते समय यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सभी प्रविष्टियाँ नियमानुसार हों तथा उचित प्रमाणकों के आधार पर की गई हों। ऐसी प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए जिससे लेखों में कपटपूर्ण तरीके से प्रविष्टि करने अथवा हेराफेरी करने की संभावना न रहे। विभिन्न व्यवहारों के संबंध में इसे निम्न प्रकार समझा जा सकता है :–

(अ) रोकड़ प्राप्ति के संबंध में –

(i) रोकड़ प्राप्ति से संबंधित सभी प्रमाणकों पर क्रमांक लगे हों तथा उन्हें क्रमवार व्यवस्थित किया जाये।

(ii) सभी प्रमाणकों पर सक्षम अधिकारियों के हस्ताक्षर हों।

(iii) सभी प्रविष्टियों के साथ प्रमाणक का क्रमांक दिखाया जायें।

(iv) सभी रोकड़ प्राप्तियाँ व्यवसाय से संबंधित हों।

(v) बैंक में जमाएँ जमा पर्ची के प्रतिपर्ण अथवा अन्य प्रमाणक के आधार पर प्रविष्ट की जायें।

(आ) रोकड़ भुगतान के संबंध में –

(i) प्रत्येक भुगतान का लेखा प्राप्तकर्ता द्वारा जारी की गई छपी हुई रसीद के आधार पर होना चाहिए, जिसको संस्था के किसी वरिष्ठ अधिकारी ने हस्ताक्षर करके अधिकृत किया हो।

(ii) भुगतान व्यवसाय से संबंधित होना चाहिए।

(इ) माल के संबंध में –

(i) माल के क्रय का लेखा करते समय लेखाकार को बीजक की सत्यता की जाँच कर लेनी चाहिए। यह देख लेना चाहिए कि बीजक पर विक्रेता का नाम, तिथि तथा धनराशि लिखी हो तथा वह संबंधित व्यवसाय के नाम से ही काटा गया हो।

(ii) माल की क्रय वापसी के संबंध में लेखाकार को आपूर्तिकर्ताओं को भेजे गये डेबिट नोट की उपयुक्तता देख लेनी चाहिए। ऐसे नोट पर आपूर्तिकर्ता का नाम, तिथि, वापस किए गए माल का विवरण, धनराशि स्पष्ट रूप से अंकित होनी चाहिए तथा सक्षम अधिकारी के हस्ताक्षर भी होने चाहिए।

(iii) बेचे गये माल का लेखा विक्रय बीजकों के आधार पर किया जाता है। ऐसे बीजकों पर ग्राहक का नाम व पता, तिथि, माल का विवरण, दर, व्यापार बट्टे की दर तथा धनराशि स्पष्ट रूप से लिखी होनी चाहिए तथा सक्षम अधिकारी के हस्ताक्षर होने चाहिए।

(iv) विक्रय वापसी के लेखन हेतु संस्था द्वारा माल लौटाने वाले ग्राहक को भेजे गये क्रेडिट नोट को आधार बनाया जाता है। इस क्रेडिट नोट पर ग्राहक का नाम, तिथि, लौटाये गये माल का विवरण, दर तथा धनराशि स्पष्ट रूप से अंकित होनी चाहिए तथा सक्षम अधिकारी द्वारा हस्ताक्षर होने चाहिए।

ऐसा पाया गया है कि अनैतिक लेखाकार माल के विभिन्न व्यवहारों की प्रविष्टियाँ बिना उपयुक्त आधार के कर देते हैं। प्रायः इनका उद्देश्य विक्रय को बढ़ा–चढ़ा कर दिखाना होता है।

(ई) अन्य संपतियों एवं दायित्वों के संबंध में :–

(i) अन्य संपतियों जैसे प्लांट, मशीनरी, भवन आदि का लेखा करते समय लेखाकार के पास सक्षम अधिकारी से हस्ताक्षरित ऐसे प्रमाणाक होने चाहिए जो बताते हों कि :–

1. सम्पत्ति का स्वामित्व संस्था के पास है।

2. सम्पत्ति वास्तव में अस्तित्व में है।

(ii) विभिन्न दायित्वों जैसे व्यक्तियों तथा संस्थाओं से लिये गये ऋण का लेखा करते समय लेखाकार के पास प्रमाणक के रूप में पर्याप्त आधार होना चाहिए जो यह बताता हो कि :–

1. दायित्व व्यवसाय से संबंधित है।

2. यह उपयुक्त रूप से अधिकृत है।

दिखावटी लेनदेन (Window Dressing) -

वित्तीय स्थिति को वास्तविक से बेहत्तर दिखाने के लिए कई बार लेखाकार दिखावटी लेनदेनों का सहारा लेते हैं। विशेषकर लेखा वर्ष की समाप्ति के समय पर ऐसा किया जाता है। इसके कुछ उदाहरण निम्न प्रकार है–

* देनदारों को लेखा वर्ष की समाप्ति से कुछ समय पूर्व भुगतान करने के लिए प्रेरित करने हेतु बट्टे का प्रस्ताव दिया जाता है। इससे देनदार शीघ्र भुगतान कर देते हैं तथा नकद राशि में वृद्धि होने से तरलता की स्थिति वास्तविक से बेहतर दिखाई देती है।

- रहतिये या स्टॉक की मूल्यांकन विधियों में इसलिए परिवर्तन करना कि उसका मूल्य बढ़ सके तथा अधिक लाभ दिखाये जा सकें।
- सम्पत्तियों पर ह्रास की विधियों में इस प्रकार परिवर्तन करना कि ह्रास कम प्रदर्शित हो तथा सम्पत्ति की आय अधिक हो जाये एवं लाभ अधिक प्रदर्शित हो।

इस प्रकार के लेनदेन करने का उद्देश्य लेखों की वास्तविक स्थिति को बदलकर प्रदर्शित करना होता है। अतएव यह नैतिक नहीं है। इससे लेखों द्वारा व्यवसाय के हितधारियों को सही सूचना प्रदान करने में बाधा उत्पन्न होती है।

महत्वपूर्ण शब्दावली

नीतिशास्त्र	Ethics
मूल्य	Values
दर्शनशास्त्र	Philosophy
आचरण	Conduct
न्यायसंगत	Just
समरूप	Equal
आनुवांशिक धरोहर	Genetic Inheritance
पेशेवर	Professional
आचार संहिताएँ	Codes of Conduct
प्रमाणक	Voucher
माल	Goods

अभ्यासार्थ प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer Type Questions)

1. नैतिकता क्या है?
2. नैतिकता के लिए अंग्रेजी शब्द (Ethics) की उत्पत्ति कैसे हुई?
3. नैतिकता का संबंध किससे है?
4. नैतिकता के आनुवांशिक होने की खोज किन्होंने की?
5. किसी लेखाकार की सबसे मूल्यवान सम्पत्ति क्या होती है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. किसी निर्णय के नीति संगत होने के लिए उसमें क्या विशेषताएँ होनी चाहिये?
2. आचार संहिता प्रायः कितने प्रकार की होती है?
3. पेशेवर लेखाकार का नैतिकता से क्या सरोकार है?
4. माल के सम्बन्ध में नैतिक आधार पर लेखांकन करते समय क्या ध्यान में रखा जाना चाहिये?
5. दिखावटी लेनदेन पर टिप्पणी लिखिये।

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. नीतिशास्त्र की परिभाषा देते हुए अवधारणा को समझाइए।
2. नीतिशास्त्र की प्रकृति पर प्रकाश डालिए।
3. नैतिकता के विभिन्न स्रोतों को समझाइए।
4. रोकड़ प्राप्ति एवं रोकड़ भुगतान के संबंध में नैतिक आधार पर लेखांकन किस प्रकार किया जाता है?